गांधीवाद

महात्मा गांधी का जन्म सौराष्ट्र में पोरबंदर गांव में 2 अक्टूबर 1869 में एक सामान्य परिवार में हुआ। इस पोरबंदर को पुराने जमाने में 'सुदामपुरी' कहा जाता था। श्रीकृष्ण को बड़े श्रद्धा से 'पोहा' प्रदान करने वाले परम प्रिय सुदामा यही रहते थे। इसी गांव में बाहर से सुदामा दिखने वाले और भारत को निष्ठादान देने वाले व्यक्ति महात्मा गांधी जन्म ले चुके थे। गांधीजी महान ही नहीं बल्कि सत्पुरुष थे। उनका पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। उनकी माँ पुतलीबाई एक साध्वी चरित्रवाली स्त्री थी। उनके पिता करमचंद राजकोट में दीवान थे। गांधी जी की प्राथमिक शिक्षा राजकोट में ही हुई। कॉलेज की पढ़ाई उन्होने भावनगर में समलदास कॉलेज में पूरी की। इसी बीच उनके पिता का देहांत हो गया।
गांधी जी इंग्लड़ समुद्र मार्ग से जाने के लिए निकले तब उनकी जाती के लोगों द्वारा विरोध हुआ। उस समय समुद्र पार करने की इजाजत हिंदू धर्म में नहीं थी पर गांधी जी अपने निर्णय पर दृढ़ रहे अतः बिरादरी के लोगों ने उन्हे समाज से बहिष्कृत करने की धमकी दी फिर भी बिना विचलित हुए वे 4 सितंबर 1888 को साउथेमप्टन के लिए रवाना हुए। 1890 में इंग्लड़ से वे वकील बनकर भारत लौटे। और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। ब्रिटीशों के खिलाफ गांधी जी ने कई आंदोलन किए। जिनमें नमक आंदोलन,चंपारण आंदोलन, खेड़ा आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन प्रमुख है। गांधी जी ने सत्य, अहिंसा के मार्ग से भारत को आजादी दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी। उनकी चिंतन धारा निम्न नुसार है।–

महात्मा गांधी की चिंतन धारा

सत्य :-- सत्य क्या है यह एक कठिन प्रश्न है लेकिन गांधी जी कहते हैं कि जो अंतःकरण की आवाज कहे वही सत्य है। सत्य गांधीजी का सर्वोच्च सिद्धांत है जिसमें अन्य सभी सिद्धांत समाविष्ट होते हैं।
सत्य शब्द 'सत' से बना है। सत्य का अर्थ है 'अस्तित्व'। अर्थात अस्तित्व सत्य के बिना किसी चीज का नहीं है। परमेश्वर का सच्चा नाम सत अर्थात सत्य। है इसलिए परमेश्वर सत्य है। यह कहना अधिक योग्य होगा सत्य की आराधना के लिए अपना अस्तित्व होना चाहिए।

साधारणतया सत्य का अर्थ सच बोलना इतना ही लिया जाता है लेकिन गांधीजी के अनुसार विचार, वाणी और आचार में सत्यता होनी चाहिए। जो सत्य को समझता है उसे जगत में और कुछ जानना बाकी नहीं है क्योंकि सत्य में ही ज्ञान समाया है। सत्य की आराधना भक्ति है और भक्ति ही हरी को पाने का मार्ग है। जिसमें कायरता की गुंजाइश नहीं है, जिसमें हार नाम की कोई चीज नहीं है। वह तो मर कर जीने का मंत्र है।

अहिंसा :– गांधीजी का दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है अहिंसा। अहिंसा का धर्म केवल ऋषि-मुनियों के लिए नहीं। वह सामान्य लोगों के लिए है। गांधीजी के अनुसार अहिंसा का मार्ग जितना सीधा है उतना ही तंग है। दरवेशी जिस तरह रस्सी पर सावधानी से पैर रखकर चलते हैं, उसी प्रकार सत्य और अहिंसा का मार्ग है जरा झुके या संतुलन खो दिया तो नीचे गिर जाएंगे। उसके लिए पल-पल के साधना की आवश्यकता होती है। साधना से ही सिद्धि प्राप्त होती है। अहिंसा मनुष्य के स्वाभिमान की रक्षा करता है। अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को अपना सब कुछ बलिदान करना पड़ता है। अहिंसा एक ऐसी शक्ति है जिसका पालन, बच्चे, युवा, स्त्री पुरुष सभी कर सकते हैं लेकिन अहिंसा के मार्ग का पहला नियम यह है कि हम अपने दैनिक जीवन में सच्चाई, विनम्रता, प्रेम, दया का प्रदर्शन करें।

अहिंसा पर बहुत लोग आलोचना करते हैं कि इसमें कायरता है लेकिन गांधी जी कहते हैं कि 'अहिंसा इस बात की इजाजत नहीं देता की मुसीबत सामने देखकर अपने प्रियजनों को वहीं छोड़कर भाग जाते हैं।

by Dr. Sangita Chitrakoti

अर्थात अहिंसा में कायरता नहीं है वह वीरों का सर्वोच्च बल है।' किसी को न मारना इतना ही अहिंसा का अर्थ नहीं है बल्कि कुविचार, उतावलापन, भाषा द्वेष, किसी का बुरा चाहना, जगत के लिए जो आवश्यक वस्तु है उस पर कब्जा करना ये सब हिंसा है।

अतः हम कह सकते हैं कि अहिंसा के बिना सत्य की खोज नहीं हो सकती। सत्य और अहिंसा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं और दोनों का समान महत्व है।

ब्रम्हचर्य :– वास्तव में सभी व्रत सत्य से ही उत्पन्न होते हैं और उसी से उसका अस्तित्व है। ब्रम्हचर्य का पूरा और सही अर्थ ब्रह्मा की खोज है। ब्रह्मचर्य में प्रत्येक को जीवन में गोता लगाकर सिद्धि प्राप्त कर अपने इंद्रियों पर संयम लाना पड़ता है। मनुष्य को विषय भोग से दूर रहना चाहिए। जानबूझकर भोग विलास के लिए अपना वीर्य खोना और शरीर को निचोड़ना बड़ी मूर्खता है। भोग विलास के कारण कई रोगों का प्रादुर्भाव होता है। संसार की स्त्रियां मेरी बहन है, माताएं है यह विचार मनुष्य को ऊंचा ले जा सकता है। ब्रह्मचर्य का पालन मन, वचन और कर्म तीनों से होना चाहिए।कानों से से विकारी बातें सुनना, आंखों से विकार उत्पन्न करने वाली वस्तु देखना, हाथों से विकार उत्पन्न होने वाले चीजों को छूना, जिव्हा से विकारोत्तेजक वस्तु का स्वाद लेना यह सब गलत है।

उपर्युक्त सभी बातों में ब्रम्हचर्य का पालन आवश्यक है।

अस्तेय : – सत्य और अहिंसा के गर्भ में छिपा है अस्तेय। अस्तेय का अर्थ है 'चोरी न करना'। हम सब थोड़ी बहुत चोरी का दोष जाने अनजाने करते हैं। दूसरों की चीज अपने पास रखना या उसकी आज्ञा के बिना लेना चोरी है। कोई चीज लावारिस होने पर ले लेना, राहों में पड़ी चीज उठाना जो हमारी नहीं है, वह तो सरकार की होती है। वह भी चोरी ही है।

अस्तेय इसके भी बहुत आगे जाता है किसी चीज की जरूरत ना होने पर भी किसी दूसरे की चीज हम उसकी आज्ञा से ले तो वह भी चोरी है। अनावश्यक कोई भी चीज अपने पास रखें तो वह भी चोरी है। ऊपर बताई हुई सब चोरियाँ बाह्य अथवा शारीरिक चोरी है। आत्मा की नीचे गिराने वाली चोरी मानसिक है। किसी चीज पर मोह उत्पन्न होकर चीज को ललचायी दृष्टि से देखते हैं तो वह भी मानसिक चोरी है। उपवास में व्यक्ति शरीर से तो नहीं खाता परंतु दूसरों को खाते देखकर मन से स्वाद लेता है तो वह भी चोरी है और वह अपना उपवास भी भंग करता है। अतः हम कह सकते हैं कि अस्तेय धर्म का पालन करते हुए मनुष्य उत्तरोत्तर अपनी आवश्यकता कम करता जाएगा तो वह व्यक्ति बहुत नम्र बनेगा और बड़ी सादगी से रहेगा।

अपरिग्रह : – अपरिग्रह अस्तेय के साथ जुड़ा है। वास्तव में चुराया हुआ ना होते हुए भी अनावश्यक चीजों का संग्रह करना चोरी का ही भाग होता है। परिग्रह का अर्थ है- 'संचय करना' और अपरिग्रह का अर्थ है 'किसी भी चीज का संग्रह न करना'। सत्यशोधक, अहिंसक परिग्रह नहीं कर सकता। वह अपनी आवश्यक वस्तु या रोजी रोटी रोज पैदा करता हैं। यदि हमारा भगवान पर विश्वास है तो हमें समझना चाहिए कि वह हमें अपनी आवश्यक चीज रोज के रोज देता रहेगा। यदि सब लोग जितना आवश्यक है उतना ही रखें तो किसी को भी पैसों की कमी नहीं होगी। कोई भूखा नहीं रहेगा। कोई जाड़े के दिनों में ठिठुरता हुआ नहीं दिखाई देगा। जगत में विषमता नहीं होगी। रोटी के अभाव में कोई लोग भटकते नहीं रहेंगे सब लोग संतोष से आनंद से रहेंगे। कंगाल को पेट भर अन्न मिलेगा। यदि किसी के पास अन्न्न,पानी नहीं है तो समाज का धर्म है कि उसे प्राप्ति करा देना। महात्मा गांधी जी के यह विचार अत्यंत उच्च और आदर्श है। इस प्रकार की अवधूत स्थिति में बिरले ही पहुंचते हैं।

अभय :– अभय का अर्थ है 'बाहरी भयमात्र से मुक्ति'। जहाँ भय हैं वहाँ धर्म नहीं होगा। अभय आध्यात्मिकता की पहली शर्त है। कायर कभी नैतिक नहीं होगा। उदात्त गुणों के विकास के लिए अभय की आवश्यकता है। अभय के बिना मनुष्य अध्यात्मिक खोज अथवा प्रेम की कदर कैसे कर सकता है? हरी के मार्ग पर चलना तलवार की धार पर चलने जैसा कार्य है। कायर अर्थात भयभीत, डरपोक। और वीर का

अर्थ है भय से मुक्त होना। मौत का भय, धन दौलत लुट जाने का भय, किसी को बुरा मानने का भय। भय की यह सूची कितनी भी लंबी हो सकती है। कहते है जिसमें मृत्यु का भय नहीं है उसने सब भयों को जीत लिया हैं। परंतु यह सही नहीं है क्यों कि अनेक लोग मृत्यु के भय को छोड़ते है परंतु अन्य दुखों से भागते हैं। अर्थात हम कह सकते हैं कि अभयव्रत का सर्वथा पालन अशक्य है। जिसे आत्मसाक्षात्कार हो गया है वहीं भयमात्र से मुक्ति पा सकता हैं। देह विषयक राग दूर हो जाने से अभय सहज से प्राप्त हो जाता है। इस दृष्टि से मालूम होता है कि भय मात्र हमारी कल्पना की उपज है। धन से, परिवार से, शरीर से अपनापन हटा दे तो फिर भय कहाँ?

इस तरह हम भय को जितते हैं तो शांति प्राप्त करते हैं और सत्यनारायण के दर्शन हो जाते हैं।

आस्वाद : – ब्रम्हचर्य के साथ निकटता का संबंध रखने वाला यह व्रत है। आस्वाद का अर्थ होता है 'स्वाद न लेना'। स्वाद का अर्थ है रस। जैसे दवा को खाते समय हम यह विचार नहीं करते की वह स्वादिष्ट है या कड़वी। शरीर को जितनी आवश्यक है उतनी उचित परिमाण में सेवन करते है। वही बात अन्न ग्रहण करते समय ध्यान में रखनी चाहिए। अधिक खाने से शरीर को हानि पहुंचती है। स्वादिष्ट लगनेवाली वस्तु का अधिक सेवन व्रतभंग है। इसका मतलब है कि किसी चीज का स्वाद बढ़ाने के लिए हम अन्य चीजों को प्रयोग करते है। तो वह व्रतभंग है। जिस प्रकार का अन्न मनुष्य सेवन करता है उसी प्रकार मनुष्य का चरित्र बदलता है। मांस आदि के सेवन के कारण क्रोध बढ़ता है इसीलिए ऐसे आहार से दूर रहना चाहिए। मनुष्य के लिए शाकाहारी भोजन सर्वोत्तम है। मनुष्य यदि किसी व्रत को धारण करता है तो उसे संपूर्ण व्रत का पालन मन, वचन, कर्म से जीवन भर करना चाहिए।

कायिक श्रम :-- श्रम मनुष्य के लिए अनिवार्य है। रोजी रोटी के लिए हर आदमी को श्रम करना, हाथ, पैर हिलाना ईश्वरीय नियम है। भगवत गीता के तीसरे अध्याय में लिखा है – "यज्ञ किए बिना जो खाता है वह चोरी का अन्न खाता है।" यहाँ यज्ञ का अर्थ है – 'कायिक श्रम'। बाइबिल में भी कहा है - "अपनी रोजी-रोटी तू खुद पसीना बहाकर कमाना और खाना। करोड़पति यदि अपने पलंग पर पडा रहे और मुंह में अगर कोई खाना डालें, फिर वह खाए ऐसी स्थिति में वह अधिक दिनों तक नहीं खा पाएगा। उसमें उसे आनंद भी नहीं मिलेगा। ऐसे कई अमीर है जो व्यायाम करते हैं और भूख उत्पन्न करते हैं। खाने के लिए मुँह तो हिलाना पड़ता ही है फिर वह राजा हो या रंक। सभी को अंग संचलन करना पड़ता है तो फिर रोटी पैदा करने की कसरत सब लोग क्यों न करे? यह एक दोष वर्ण व्यवस्था के कारण उत्पन्न हो गया है। कुछ लोग कायिक श्रम को निम्न मानते हैं लेकिन यह गलत है। बालक, युवा, वृद्ध, मजदूर, अपंग सभी को परिश्रम करना चाहिए। इससे प्राकृतिक नियम भंग नहीं होता।

अतः हम कह सकते हैं कि किसी भी व्रत के पालन के लिए स्वयं निश्चय आवश्यक है क्योंकि स्वयं निश्चय ही ईश्वर की संपूर्ण आपूर्ति है।

गांधीजी के सामाजिक विचार

गांधीजी महान समाज सुधारक थे। उन्होने सामाजिक विचारधारा को महत्व दिया। समाज सुधारक का स्थान उन्होंने सामाजिक आंदोलन में सर्वश्रेष्ठ माना है। गांधीजी देश में व्याप्त कुरूढ़ियां, कुप्रथाएँ, बुराइयों को दूर करना चाहते थे। उनका कहना था कि इन बुराइयों ने हिंदू समाज को खोखला बना दिया है। समाज सुधार के लिए उन्होंने एक कार्यक्रम बनाया। यह कार्यक्रम उन्होंने देशभर चलाया। इसके कारण सामाजिक सुधार की प्रक्रिया धीरे-धीरे विकसित होने लगी।

सामुदायिक भावना :-- राष्ट्रीय एकता के लिए सामुदायिक एकता का होना जरूरी है। राष्ट्रीय शक्ति बढ़ाने के लिए सभी लोगों में समन्वय का भाव होना चाहिए। इसी कारण जनता को एक सूत्र में बांधने का प्रयास गांधीजी ने किया। भारत में विविधता है। हमारे देश में अलग-अलग जाति, धर्म, वंश के लोग अलग-अलग प्रांतों में रहते हैं और प्रांत के अनुसार भाषा भी अलग-अलग है। इतना ही नहीं हर प्रांत की

वेशभूषा, केशभूषा, वातावरण आदि सब बातें अलग-अलग है। इस विविधता में एकता लाना आवश्यक है। इसी कारण गांधीजी ने सामुदायिक एकता का महत्व लोगों के सामने रखा।

आर्थिक समानता :-- दुनिया के सभी लोग एक जैसे हैं इसलिए सबको बराबर का अवसर पाने का अधिकार है भले ही उनकी क्षमता एक जैसी नहीं होती। यह स्वाभाविक है कि कुछ लोग ज्यादा पैसे कमाएँ और कुछ कम। आर्थिक समानता के बारे में गांधीजी का आशय है कि प्रत्येक व्यक्ति के पास जितना पैसा आवश्यक है उतना ही रखे। लेकिन आज घोर आर्थिक विषमता दिखाई दे रही है। मुट्ठी भर लोगों के घर पैसों का केंद्रीकरण हो गया है, बल्कि उन पैसों का सामान वितरण आवश्यक है। विनोबा भावे ने महात्मा गांधी जी के विचारों से प्रेरित होकर भूदान आंदोलन चलाया। उन्होने जिनके पास अधिक जमीन है उनको भूदान करने के लिए प्रेरित किया। जिससे सामाजिक विषमता कम हो जाए।

ग्रामीण उद्योग धंधों का निर्माण :-- प्राचीन युग में भारत के गांव स्वयंपूर्ण थे, स्वावलंबी थे। बारह गावों में बारह बलुतेदार होते थे और उनके जरिए समस्त गांव का कारोबार चलता था। उस समय वस्तु विनिमय पद्धति थी। इस स्वावलंबन को अंग्रेजों ने नष्ट किया। धीरे-धीरे भारतीय गांवो में बसे उद्योग धंधो को बंद किया। अँग्रेजी माल भारतीय बाज़ारों में भर जाने के कारण हमारे ग्राम उद्योगोंगा ह्रास हो गया। अतः ग्रामीण अर्थव्यवस्था बिलकुल चरमरा गयी थी। गांवों की स्थिति सुधारने हेतु गांव में फिर से एक बार समस्त उद्योग धंधों का निर्माण आवश्यक था। इस दृष्टि से महात्मा गांधी ने पहल की।

नारी शक्ति : – महात्मा गांधी समाज में नारी की दुर्दशा देखकर बहुत दुखी थे। वे नारी शक्ति को पहचानते थे। उस समय समाज में स्त्रियों के सामने कई समस्याएँ थी। नारी अबला थी, पर्दे में कैद थी, उसे समानता का दर्जा नहीं था। दहेज प्रथा, बालविवाह, विधवा विवाह, विधवाओं की दशा, केशवपन, अशिक्षा आदि कई समस्याओं का सामना उसे करना पड़ता था। वास्तव में नारी अबला नहीं सबला है। पर उसे अपनी क्षमता पता ही नहीं है। नारी त्याग, विनम्रता, और ज्ञान का प्रतीक है। लेकिन वह मात्र पुरुषों के भोग की वस्तु बन गई थी। गांधीजी कहते थे कि "यदि मैंने स्त्री के रूप में जन्म लिया होता तो मैं पुरुष के विरुद्ध विद्रोह करता। स्त्री केवल मन बहलाव के लिए निर्माण नहीं हुई । स्त्री के हृदय में यदि स्थान पाना है तो उसे मानसिक रूप में स्त्री बनना पड़ता है। स्त्री का उतना ही हक है जितना पुरुषों का है। इसलिए स्त्री का पढ़ना, लिखना आवश्यक है। पढ़ने लिखने के बाद वह आकाश को छू सकती है।

मातृभाषा का विकास :-- गांधीजी मातृभाषा में शिक्षा देने का जोरदार समर्थन करते थे। व्यक्ति के जीवन में मातृभाषा का स्थान अनन्य साधारण है। मातृभाषा ही हमारी संस्कृति और संस्कारों की संवाहिका है। उसी में व्यक्ति ज्ञान के आदर्श रूप को आत्मसात कर पाता है और हम अपने विचारों को समर्थ रूप में प्रकट कर सकते हैं। इसलिए मातृभाषा में ही प्राथमिक शिक्षा बच्चों को दी जानी चाहिए ऐसा गांधीजी का स्पष्ट मत था। विदेशी भाषा के कारण युवा वर्ग के आचार, विचारों में अंतर आ गया था। वे भारतीय संस्कृति को भूलने लगे थे। बाबू बनकर विदेशी विचारों के दास बन गए थे। इस पर रोक लगाने के लिए मातृभाषा को व्यापक रूप में व्यवहार में लाना अनिवार्य था। इसलिए गांधीजी ने मातृभाषा के संवर्धन, संरक्षण को प्रोत्साहन दिया।

राष्ट्रभाषा का विकास :– महात्मा गांधी को इस बात का बड़ा दुख होता था की भारत जैसे महान राष्ट्र की कोई राष्ट्रभाषा नहीं है।वे कहते थे राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा होता है। इसलिए 28 मार्च 1918 में मध्य प्रदेश के इंदौर में जब हिंदी साहित्य समिति के भवन की रखी जा रही थी तब उन्होने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने संकल्प किया था। राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति महात्मा गांधी का प्रेम बहुत गहरा था। हिंदी को वे हृदय की भाषा मानते थे। उन्होने कहा कि देवनागरी या उर्दू में लिखी गई भाषा हिंदुस्तानी ही राष्ट्रभाषा हो सकती है। अंग्रेजी को इस देश से निकालने का प्रयास गांधीजी ने किया। राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक था। इसलिए अंग्रेजी का स्थान अंतरराष्ट्रीय भाषा के रूप में रहने और हिंदुस्तानी ही भारत की राष्ट्रभाषा होने के पक्ष में वे थे। राष्ट्रभाषा राष्ट्र के विभिन्न

भाषाओं को एक सूत्र में बांधने का प्रयास करती है इसी कारण राष्ट्रभाषा को राष्ट्र का प्राण माना जाता है। महात्मा गांधी स्वतंत्रता प्राप्ति का माध्यम हिंदी को ही मानते थे। इसलिए उन्होने हिंदी का खूब प्रचार प्रसार किया।

बुनियादी तालीम : – महात्मा गांधी शिक्षा को महत्वपूर्ण मानते हैं क्योंकि वे मानते है कि शिक्षा में ही राष्ट्र की उन्नति है। परंतु वर्तमान शिक्षा पद्धति से गांधीजी संतुष्ट नहीं थे। उनके मतानुसार अंग्रेजी भाषा केवल नौकरी पाने के लिए है। गांधीजी इन विद्यार्थियों को सभी तरह से विकसित कर देना चाहते थे। वे बच्चों को पुस्तकीय शिक्षा या अव्यावहारिक शिक्षा से हटाकर एक मूलोद्योग पर आधारित व्यावहरिक और सर्वांगीण विकास की शिक्षा देना चाहते थे क्यों कि बुनियादी शिक्षा व्यक्ति और समाज को स्वावलंबी बनाती है।

बुनियादी शिक्षा के उद्देश्य –

1] श्रम का महत्त्व प्रतिस्थापित करना।

2] विद्यार्थियों का चारित्रिक और नैतिक विकास करना।

3] विद्यार्थियों को देश का उत्तम नागरिक बनाना।

4] बच्चों का समग्र शारीरिक, मानसिक, तथा आध्यात्मिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास करना।

खादी का प्रयोग : – गरीब लोगों के लिए रोटी कमाने का सम्माननीय व्यवसाय खादी है। महात्मा गांधी ने मानसिक शांति के लिए और दो पैसे कमाने के लिए चर्खे का दिव्य संदेश दिया। चरखे पर सूत कताई होती थी और खादी बनती थी। खादी भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की पहचान थी। गांधीजी ने खादी केवल वस्त्र नहीं एक विचार है कहकर स्वदेशी का नारा दिया।

अस्पृश्यता निवारण : – महात्मा गांधीजी कहते थे की मैं फिर से यदि जन्म लूंगा तो अस्पृश्य होना पसंद करूंगा ताकि मैं उनके अपमानों का भागीदार बनकर उनकी वेदना स्वयं सहूंगा और हरिजनों को इस दयनीय स्थिति से छुटकारा देने का प्रयास करूंगा। इसलिए मेरी प्रार्थना है कि मेरा पुनर्जन्म हो तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के रूप में नहीं तो अतिशुद्र के रूप में हो। गांधीजी ने अपने जीवनकाल में 'हरिजन' नाम से पत्रिका भी निकाली।

गाँव की सफाई : – सच्चा भारत उसके सात लाख गांवों में बसता है। यदि भारत को विश्व में स्थान प्राप्त करना है तो इसे विशाल जनसंख्या को फिर से जीना सीखाना होगा। आज हमारे गांव में तीन दोष है –

1]पर्याप्त आहार 2] जड़ता 3] स्वच्छता का अभाव

ग्रामवासी अपने ही स्वास्थ्य या कल्याण के प्रति जागृत नहीं थे। इनको स्वच्छता का पाठ महात्मा गांधीजी ने पढ़ाया। स्वयं स्वच्छता का करके लोगों के सामने आदर्श रखा। उन्होने सामूहिक स्वच्छता की भावना लोगों के सामने रखी। सामूहिक रूप में सभी सार्वजनिक स्थानों को स्वच्छ रखा रखा जा सकता है। कोई व्यक्ति जो लापरवाही से यहाँ- वहाँ थूककर या कूड़ा कचरा फेंककर गंदगी निर्माण करता है तो ऐसा व्यक्ति प्रकृति और मनुष्य दोनों के प्रति पाप करता है। जो नदी हमें जीवन देती है उसीके पानी को हम गंदा करते है। फिर दूषित पानी से कई बीमारियाँ फैलती है। इसलिए गांधीजी ने राष्ट्रीय अथवा सामाजिक स्वच्छता की भावना को बढ़ावा दिया।

आदिवासियों की सेवा : – आदिवासियों का जीवन पहाडों और जंगलों के बीच बितता है। समाज के मुख्य प्रवाह में वे न होने के कारण उनमें गरीबी, भुखमरी, अज्ञान, अशिक्षा, कई प्रकार की बीमारियां, अंधविश्वास आदि विद्यमान थी। उनमें जनजागृति लाना भी आवश्यक था। जनजागृति के बिना आदिवासी लोग विकसित नहीं होंगे। तथा भारतीय लोकतंत्र में अपना उचित स्थान नहीं बना पाएंगे। अतः इनकी सेवा करना आवश्यक था

प्रौढ़ शिक्षा : – महात्मा गांधीजी ने प्रौढ़ शिक्षा का प्रचार और प्रसार किया। उन्होंने अनपढ़ लोगों को ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। अनपढ़ मनुष्य समाज के लिए अभिशाप है। बड़ों को साक्षर करने के लिए महाविद्यालयीन छात्रों को प्रयास करना चाहिए। जिससे प्रौढ़ौ की निरक्षरता दूर हो जाएगी और उनका जीवन समृद्ध और विकसित बनेगा।

किसानों मजदूरों छात्रों का संगठन : – आज के युग में संगठन महत्वपूर्ण है। जब सभी निर्बल एक हो जाएंगे तब उनकी शक्ति बढ़ेगी। ऐसे संगठित लोग किसी भी समस्या को चुटकी में हल कर सकते हैं। संगठन से किए आंदोलन को शोषक वर्ग, पूंजीपति तथा जमींदार वर्ग घबरा जाता है। वे आंदोलकों की माँगे पूर्ण करने के लिए तैयार हो जाते है। उनमें नए परिवर्तन हो जाते हैं। इसीलिए गांधीजी कहते हैं यदि किसान, मजदूर अपनी शक्ति को पहचानेंगे तो बुराइयां दूर हो जाएंगी। यदि किसान कहेगा जब तक उसे खाना-पीना, शिक्षा के लिए पैसे नहीं मिलेंगे तब तक वह खेत पर काम नहीं करेगा। ऐसे समय जमींदारों को झुकना ही पड़ेगा। अतः लोगों का संगठन आवश्यक है। वे अपने अदम्य शक्ति से अन्याय, अत्याचार दूर करके राष्ट्रीय उन्नति में सहयोग दे सकते हैं।

कुष्ठ रोगियों की सेवा : – समाज में कुष्ठ रोगियों को तिरस्कृत नजरों से देखा जाता था। ऐसे रोगियों को घर से बहिष्कृत कर दिया जाता था। इस रोग के बारे में कई भ्रांतियाँ समाज में फैली हुई थी। जैसे दैवी प्रकोप, पूर्व जन्म पाप, स्पर्श जन्य रोग इत्यादि उन्होंने कुछ रोगियों के लिए आश्रम, अस्पताल बनवाएं। उस समय ऐसे आश्रमों की आवश्यकता थी जहां ऐसे लोगों पर इलाज होता है और साथ ही उनके लिए नवजीवन देने का प्रयास होता है। कुष्ठ रोगियों के लिए बाबा आमटे का कार्य आदरणीय है।

इस तरह गांधीजी जीवन के हर एक बात को गंभीरता से सोचते थे। उन्होंने मनुष्य के जीवन का सर्वांगीण विकास करने का प्रयास किया। राजनीतिक विचारों में भी गांधी जी का स्थान में अनन्यसाधारण है। किरण जी के बाद गांधी जी ने आजादी का आंदोलन अपने हाथ में लिया राजनीति में उन्होंने आई सा तत्व को अपनाया आई सरूपी नया हथियार उन्होंने लोगों के सामने रखा अपने विचार तत्वों के अनुसार आजादी का आंदोलन चलाया स्वदेशी की घोषणा की सविनय अवज्ञा भंग के कार्य को स्वीकार किया गांधीजी ने बिना किसी शास्त्र से आजादी की जंग जीती अतः हम कह सकते हैं कि राजकीय और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में गांधीजी का स्थान अनन्य साधारण है।

संदर्भ ग्रंथ

1] मोहनदास करमचंद गांधी, संपा- मंत्री,मंगल प्रभात, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण 15,1989

2] मोहनदास करमचंद गांधी, संपा- हरिप्रसाद व्यास, ग्राम स्वराज्य, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अलाहाबाद, संस्करण 2, 2003

3] मोहनदास करमचंद गांधी, संपा- मंत्री, सर्वोदय (रस्किन- 'अंटु दिस लास्ट' का सार) सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन,नई दिल्ली, संस्करण 17, 2003

4] आर. के. प्रभु, यू. आर. राव, महात्मा गांधी के विचार, नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, अहमदाबाद, संस्करण 1994